नारी कर्त्तव्य

गृहस्थी रूपी गाड़ी पति-पत्नी रूपी दो पहियों के आधार पर ही चलती है। धर्मात्मा एवं चतुर युगल के बिना गृहस्थधर्म का निर्वाह पूर्णरूपेण नहीं हो सकता। अष्टमूलगुण, षडावश्यक एवं ग्यारह प्रतिमाओं का जो वर्णन शास्त्रों में किया गया है वह श्रावक और श्राविकाओं को समानरूप से पालने योग्य है। विशेष इतना है कि गृहस्थधर्म का प्रतिपालन विवेकशील एवं पापभीरू नारियों के सहयोग से ही हो सकता है। किन्तु पाश्चात्य फैशन रूपी भूत के अधीन रहने वाली—

जो स्त्रियाँ प्रमाद आदि के कारण शुद्ध भोजन बना कर अपने कुटुम्ब आदि को नहीं खिला सकती हैं, जिन्हें बाजार का आटा, मसाला, अचार, पापड़, नमकीन एवं मिठाई आदि अभक्ष्य पदार्थों के खाने-खिलाने में ग्लानि नहीं है तथा जीवदया का भाव न होने से जो बिना छने जल का प्रयोग करती हैं, वे स्त्रियाँ अपने और परिवार के धर्म का विघात करने के कारण यहाँ से मर कर जलचर जीवों में उत्पन्न होती हैं।

जो स्त्रियाँ प्रमाद, अज्ञान, भूख आदि की व्याकुलता या अन्य किसी कारण से बिना शोधन किए दाल, चावल आदि धान्य ओखली आदि में कूटती हैं तथा जीव युक्त अनाज आदि धूप में सुखा देती हैं और भड़भूँजा से भुंजा लेती हैं, वे अनन्त काल तक संसार में परिभ्रमण करती हैं।

जो स्त्रियाँ मन, वचन और काय से जीवरक्षा का प्रयत्न नहीं करतीं, शोधन किए बिना ही गेहूँ आदि धान्य पीसती एवं पिसाती हैं तथा बिना शोधन किए ईंधन जलाती हैं, वे मर कर कूकरी, शूकरी, गधी, सर्पिणी, भैंस एवं कुत्ती आदि की नीच योनियों में जन्म लेती हैं।

जो स्त्रियाँ बिना प्रयोजन कच्चे फल, फूल, पत्ते आदि वनस्पति का छेदन-भेदन करती हैं, उनके शरीर के अंग कुष्ठ आदि रोगों से गल-गल कर छिन्न-भिन्न होते रहते हैं

जो स्त्रियाँ पकवान आदि बनाते समय तेल, घी, गुड़ तथा शक्कर आदि से लिप्त हाथ यथा-तथा दीवारों में पोंछ देती हैं, तथा शक्कर, गुड़ के मैल आदि से लिप्त वस्त्र बिना धोये यद्वा-तद्वा जमीन आदि पर डाल देती हैं जिससे अनेक (चींटी, मक्खी, मकोड़े आदि) जीवों का सामूहिक घात हो जाता है, उस पाप के फल से वे एकेन्द्रिय पर्याय में अथवा इतर-निगोद में निरन्तर पैदा होती रहती हैं।

जो स्त्रियाँ वस्त्र से छाने बिना ही तेल, घी, दूध आदि स्वयं खाती हैं और परिवार को खिलाती हैं, वे भव-भव में अन्धी होती हैं।

जो स्त्रियाँ मक्खन निकालकर उसे 48 मिनट के भीतर गर्म नहीं करतीं तथा आलू, प्याज, लहसुन, बैंगन और नवनीत आदि स्वयं खाती हैं एवं परिवार को खिलाती हैं, वे बन्धन, मारण, ताड़न तथा छेदन-भेदन आदि दु:खों को प्राप्त होती हैं।

जो स्त्रियाँ भिण्डी, करेला आदि सब्जियों को चाकू आदि से सुधारते समय विवेक नहीं रखती, अथवा भिण्डी आदि को बिना शोधन किए ही आग में साबुत भूँज लेती हैं, उन्हें निरन्तर कोल्हू आदि यन्त्रों में पेला जाता है।

जो स्त्रियाँ चातुर्मास में भी पत्तीवाला शाक एवं साबुत अनाज स्वयं खाती हैं और कुटुम्ब को खिलाती हैं, तथा केतकी, नीम और सहजना आदि के फूल, कन्दमूल आदि एवं कच्ची गीली हल्दी का भक्षण करती-कराती हैं वे नीच योनियों में अनेक प्रकार के भयंकर दु:ख भोगती हैं।

जो स्त्रियाँ नाना प्रकार के व्यंजन, पकवान तथा दाल-भात रोटी आदि बनाने में निपुण नहीं हैं, रसोईघर एवं चँदेवा आदि का सम्मार्जन नहीं करतीं, उन्हें एकदम काले और गन्दे रखती हैं, पाउडर से बर्तन साफ करती हैं और उन्हें कई घण्टों तक गीले में ही पड़े रहने देती हैं, रसोईघर में भोजन सामग्री ढक कर नहीं रखती, चप्पल पहिन कर रसोई बनाती हैं और रसोई के बर्तन कई घण्टों तक जूठे पड़े रहने देती हैं, वे भव-भव में कर्मकरी अर्थात् दासी आदि पर्यायों को प्राप्त करती हैं।

जो स्त्रियाँ प्रमाद के वशीभूत हो दो-दो, तीन-तीन दिन तक फ्रिज में रखे हुए गीले आटे की रोटियाँ तथा बनी हुई सब्जी आदि स्वयं खाती और खिलाती हैं, जिह्वा इन्द्रिय के वशीभूत होकर रसोई आदि को जूठा कर देती हैं तथा उत्तम घी, मावा आदि पदार्थों में जूठे पदार्थ मिला देती हैं, जो सदोष भोजनादि को शुद्ध कर देती हैं, जो अशुद्ध भोजन करनेवाले बालकों की शुद्धि नहीं करती, दूषित मन, वचन, काय से साधर्मियों को भोजन कराती हैं एवं और भी अपने अनेक कर्तव्यों का पालन नहीं करतीं, वे जन्म-जन्म में दरिद्री और अंगहीन होती हैं।

जो स्त्रियाँ घर आदि झाड़ते, बुहारते, लीपते, पोतते एवं रंग आदि करते समय तथा वस्त्र आदि धोते समय जीवों की रक्षा नहीं रखतीं तथा गर्म जल में बिना छना ठण्डा जल मिलाकर स्नान करती एवं कराती हैं, वे पंचपरावर्तनरुप संसार में परिभ्रमण करते हुए दीर्घ काल तक नरकादि गतियों के दु:ख भोगती हैं।

जो स्त्रियाँ क्रीम, पाउडर, लिपस्टिक एवं नाखून आदि हिंसात्मक प्रसाधनों से शरीर का शृंगार करती हैं, जिनेन्द्रदर्शन या पूजन किये बिना भोजन करती हैं, अष्टमी-चतुर्दशी आदि पर्व के दिनों में भी वस्त्र तथा शरीर आदि में साबुन लगाती हैं, चोटी बनाती हैं और भोग

भोगने के लिए व्रत नियमों का भंग कर देती हैं, वे भव-भव में शारीरिक और मानसिक भयंकर दु:ख भोगतीं हैं।

जो स्त्रियाँ लोभ के वशीभूत होकर दूसरों के दूतीपने का कार्य करती हैं, दूसरों (देवरानी, जेठानी, सास एवं ननद आदि) का धन हरण करती रहती हैं, धरोहर हड़प लेती हैं तथा कषायों से वेष्ठित रहती हैं, वे अढाई पुद्गल परावर्तन काल पर्यन्त निगोद से नहीं निकलती हैं।

जो स्त्रियाँ माया कषाय से ग्रसित रहती हैं और छोटी-छोटी बातों पर कलह करती हैं, वे नियमत: तिर्यंच गति में जन्म लेकर सींगों से लड़ती हैं पश्चात् संक्लेश परिणामों से मर कर नरक जाती हैं।

जो स्त्रियाँ चप्पल पहिन कर मन्दिर जाती हैं। मौजे पहिने हुए देव शास्त्र गुरु के दर्शन करती हैं। मन शुद्धि, वचनशुद्धि, शरीरशुद्धि, वस्त्रशुद्धि, द्रव्यशुद्धि, क्षेत्रशुद्धि, कालशुद्धि और उपकरण आदि की शुद्धि के बिना ही देव पूजन और आहार दान आदि धार्मिक कार्य करती हैं। वे गर्भपात के सदृश दोष से दूषित होती हैं।

जो स्त्रियाँ अपने गर्भस्थ बालक-बालिका की स्वयं अपने ही हाथों से हत्या करती हैं, अर्थात् गोली आदि खाकर गर्भपात करती-कराती हैं, वे अनन्तकाल तक क्षुद्रभव धारण करती हुई एक श्वास में 18 बार जन्म-मरण की भयंकर वेदना का वेदन करती हैं।

जो स्त्रियाँ ब्रह्मचर्यव्रत को दूषित करती हैं, ब्रह्मचर्यव्रत को दूषित करने वाली वेश-भूषा पहनती हैं और नाना प्रकार से शरीर को सुसज्जित कर उसका प्रदर्शन करती हैं, वे चाण्डाल कुल में जन्म लेती हैं।

जो स्त्रियाँ मुनियों को आहार देते समय अधिक बोलती हैं, कफ आदि थूकती हैं, जम्भाई लेती हैं, क्रोध करती हैं, कृपणता

करती हैं, ईर्ष्या या मात्सर्य भाव रखती हैं, मनोभावना हीन रखती हैं और आहारदान देने में प्रमाद करती हैं, वे भव-भव में घोर दु:खों की भाजन होती हैं।

जिन स्त्रियों के हृदय में सच्चे देव, शास्त्र, गुरु का दृढ़ श्रद्धान, जैनतत्त्व की रुचि और जीवरक्षा का भाव नहीं है, स्त्री-पर्याय उनका कभी पीछा नहीं छोड़ती अर्थात् उन्हें भव भव में स्त्री पर्याय ही प्राप्त होती रहती है।

इस प्रकार और भी अनेक प्रकार के दूषण हैं जो स्त्रियों में बहुलता से पाए जाते हैं, अत: अपनी आत्मा का कल्याण करने हेतु मायाचारी आदि समस्त दुर्गुणों का प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए।